# वैश्विकरण में हिंदी की भूमिका

DR MANJEET
ASSISSTANT PROFESSOR
VAKM BHADURGARH

मनुष्य विधाता की एक अनुपम व सर्वोतम रचना है। वह अपनी बुद्वि, वाक्–शक्ति व विचार शक्ति से अन्य प्राणियों से भिन्न है और अपने इन्हीं गुणों के बल पर वह एक स्वस्थ समाज का निर्माण करता है। इस स्वस्थ समाज के निर्माण एवं संस्कृति की पहचान के लिए भाषा एक अह्म एवं अनिवार्य साधन होता है। जिस प्रकार विभिन्न ऋतुओं में विविध प्रकार के पुष्प खिलकर धरती का श्रृंगार करते हैं ठीक उसी प्रकार भाषाएँ भी अपनी जननी भूमि से प्रभाव ग्रहण करके नाना प्रकार से उसकी संस्कृति, सभ्यता एवं समाज के सौदर्य में अभिवृद्वि करती हैं।

जहाँ तक बात हिंदी भाषा की है तो कहना गलत न होगा कि संस्कृंत की सबसे बडी बेटी हिंदी विश्व के जन–जन की अभिव्यक्ति की भाषा बनने की ओर अग्रसर है।पिछले वर्षों में ही हिंदी ने सारी दुनिया में विस्तार पा लिया है। इसकी लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि आज विश्व में बोली जाने वाली भाषाओं में यह दूसरे स्थान पर है। विश्व के अनेक देशों में हिंदी का प्रचार–प्रसार बड़ी तेजी से बढ रहा है। आज हिंदी एक मजबूत विश्व भाषा के रूप में उभर कर सामने आ रही है। संसार के लगभग 127 देशों में भारतवंशी प्रवासी निवास करते हैं तथा इनकी संख्या लगभग दो करोड़ से भी ज्यादा है और हर्ष का विषय यह है कि इनमें से आधे से भी अधिक हिंदी भाषा से केवल परिचित ही नहीं है, बल्कि उसे व्यावहारिक भाषा के रूप में प्रयोग करते हैं।

हिंदी भाषा केवल भाषा नहीं है बल्कि यह आदर्श मूल्यों की अभिव्यक्ति भी करती है। हमारी संस्कृति में बड़े महत्वपूर्ण एवं आदर्श जीवन मूल्य हैं और उनकी संवाहिका एवं संरक्षिका है हिंदी। यद्यपि यमय के साथ जीवन मूल्य बदलते रहते हैं।और कुछ ऐसे होते हैं जो आज प्रासंगिक हैं लेकिन कल उनका कोई महत्व ही न रहे मगर हमारे पवित्र ग्रंथ वेदों में ऐसे–ऐसे मंत्र हैं, ऐसे–ऐसे विचार हैं जिनका मूल्य आज भी उतना ही है जितना कि हजारों साल पहले था और हिंदी के माध्यम से इन मूल्यों की अभिव्यक्ति करके न केवल हम ही लाभन्वित हो रहे हैं, बल्कि हम संपूर्ण मानव–जाति का पथ–प्रदर्शन करने में भी अग्रसर हैं।

हजारों वर्षो से वैश्विकरण की चेतना का विचार हमारी संस्कृति में है और हमारी हिंदी भाषा की शब्द सामर्थ्य व्यक्ति एवं सभी भाषाओं के शब्दों को अपने में समाहित करने की अद्भुत क्षमता 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को ही व्यक्त करती है। डॉ.कर्ण सिंह ने हिंदी भाषा की इस विस्तृतता पर प्रकाश

डालते हुए कहा है कि ''हिंदी हिंदी समन्वय की भाषा रहीं है। यह भाईचारे और परस्पर प्रेम की भाषा रही है। जनसाधारण की भाषा रही है। आज से नहीं कई शताब्दियों से हिंदी की यह विशेषता रही है।''1

हिंदी केवल भाषा ही नहीं है बल्कि यह भारतीय संस्कृति की उर्जा और शक्ति भी है। इसकी वैश्विकरण में भूमिका का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि आज विश्व भर में लोग अंग्रेजी से ज्यादा हिंदी का प्रयोग करते हैं। ग्लोबलाइजेशन के इस युग में आज विश्व एक वर्ल्ड विलेज बन गया है। वैश्विकरण की भावना प्रबल हो रही है और ऐसे में हिंदी साहित्य मानवीय मूल्य स्थापित करने में अपनी अह्म भूमिका निभा रहा है। वह चाहे सोलाहवीं शताब्दी में लिखा गया तुलसी का 'रामचरित मानस' हो या फिर बीसवीं शताब्दी के जयशंकर प्रसाद की 'कामायनी' या फिर प्रेमचन्द का 'गोदान', सभी ने विदेशों में भारतीय जीवन मूल्यों की धूम मचा दी और विश्व को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया है।

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन;10 जनवरी 1975 नागपुर में हिंदी के अन्तरराष्ट्रीय महत्व को रेखांकित करते हुए भारत की तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी ने कहा था–"हिंदी विश्व की महान् भाषाओं में से एक है। यह करोड़ों की मातृभाषा है और करोड़ों लोग ऐसे हैं जो इसे दूसरी भाषा के रूप बोलते हैं। गंगा–यमुना के निकटवर्ती प्रदेशों से विकसित होकर इस भाषा का प्रयोग भारत के सुदूरवर्ती भागों तक प्रचलित है। इसका स्वर उन देशों में भी भेजा जा सकता है जहाँ विद्वान लोग हिंदी का अध्ययन–अध्यापन करते हैं।''2

आज हिदी विश्व भाषा बन रही है। भारत हिंदी एवं हिंदी साहित्य की मूल भूमि है, किन्तु भारत के बाहर भी इसका मान–सम्मान कम नहीं है इसका कारण है प्रवासी भारतीयों के द्वारा अपनी मूल भाषा हिंदी का त्याग न करना । ये भारतीय जिन देशों में भी गए वहाँ वे दो चीजें अवश्य लेकर गए कड़ी मेहनत एवं अपनी मातृभाषा हिंदी। वे विदेशों में हिंदी बोलते, पढ़ाते हैं। धीरे–धीरे उनकी हिंदी इतनी प्रोढ होती गई और साहित्यिक रूप धारण करने लगी । आज विदेशों में प्रवासी भारतीयों व अन्य हिंदी विद्वानों द्वारा रचा गया विपुल साहित्य किसी से छिपा हुआ नहीं है। लेखक इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ ने अपनी पुस्तक 'विदेशों में हिंदी' जोकि उनके द्वारा सन् 2002 में प्रकाशित की गई थी, में विदेशों में भारतीय प्रवासियों के आगमन से लेकर हिंदी की विकास–यात्रा पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है। इसमें 1834 से लेकर 2002 तक प्रवास में हिंदी पठन–पाठन, साहित्य लेखन की चर्चा विस्तृत रूप से की है।3

विदेशों में हिंदी भाषा के अध्ययन–अध्यापन एवं समृद्व साहित्य लेखन इस बात का पुख्ता प्रमाण है कि भले ही हिंदी भाषा को संयुक्त राष्ट्र की भाषा न स्वीकार किया गया हो लेकिन विश्व में लोकप्रियता में वह अन्य भाषाओं से किसी भी प्रकार से कमतर नहीं, अपितु आगे ही है। 1921 में अमेरिका

;जापान में विदेशी भाषा संस्थान की स्थापना व इस संस्थान के द्वारा हिंदी भाषा व साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान, रूस में हिंदी विद्यालय की स्थापना, रूसी राजकीय मानविकी विश्वविद्यालय में हो रहा हिदी शिक्षण का कार्य, लेखकों द्वारा हिंदी में कविता, लेख, संस्मरण, यात्रावृत, नाटक आदि विधाओं में साहित्य रचना, विदेशों में हिंदी के प्रचार–प्रसार में संपादित हो रही हिंदी पत्र–पत्रिकाएँ, अमरीका में आज विभिन्न स्तरों पर हिदी सीखाने के लिए खुले 100 से भी अधिक केन्द्र व हिंदी जिस रूप में अलग–अलग देशों मे विकासशील है निश्चित रूप से हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है और इस पुनीत कार्य मे विदेशी हिंदी विद्वानों का जो अवर्णनीय एवं अतुलनीय योगदान रहा है वह निश्चित रूपेण सराहनीय एवं अविस्मरणीय है।

आज हिंदी अपनी 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को साकार करती हुई विश्व को आदर्श जीवन मूल्य प्रदान करती हुई वैश्विकरण में जो योगदान देती हुई आगे बढ रही है वह निश्चय ही किसी भाषा के लिए गौरव का विषय है।

---

1. डॉ. कृष्ण सिंह द्वारा लिखित आलेख 'हिंदी केवल भाषा ही नहीं हमारे मूल्य की अभिव्यक्ति भी है' से उद्धृत।
2. प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा दिए गए भाषण से साभार।
3. इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ, विदेशों हिंदी, पृ. 335

श्रीमती मंजीत

वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय,

बहादुरगढ़, हरियाणा